श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

# श्रुतदीप

।। सुयं मे आउसं ।।

विक्रम संवत् २०७६ • वर्ष : ३ • अंक : ३ • फरवरी २०२०

## ब्राह्मी लिपि का एकमात्र स्रोत – शिलालेख

**मुनिश्री वैराग्यरतिविजय गणी**

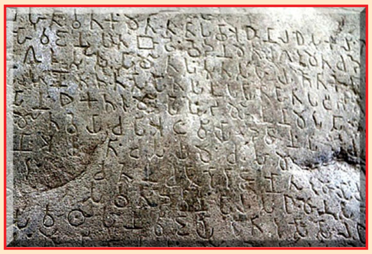

ब्राह्मी लिपि शिलालेख जूनागढ

वर्तमान भारत की तमाम लिपियों का उद्भव **ब्राह्मी** लिपि से हुआ है, इसके बावजूद देश में आज कहीं भी ब्राह्मी लिपि से लिखा कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। चीन में इस लिपि में लिखे ग्रंथ का विशेष उल्लेख है। भारत में केवल शिलालेखों पर उत्कीर्ण यह लिपि दिखाई देती है।

शिलालेख तीन प्रकार के हैं –

१) **शिलालेख** – सपाट पत्थरों पर उत्कीर्ण लेख

२) **स्तंभलेख** – मंदिर अथवा स्तूपों के खंबों पर उत्कीर्ण

३) **गुफा लेख** – गुफाओं की दीवारों आदि पर उत्कीर्ण

उपरोक्त अभिलेखों में ब्राह्मी के साथ खरोष्टी लिपि का भी उपयोग दिखाई देता है। आज उपलब्ध इस तरह के लेखों में सबसे प्राचीन लेख लगभग ३००० वर्ष पुराना है, जो नेपाल के पीपरवा गांव स्थित एक स्तंभ पर मिलता है। यह लेख सम्राट अशोक के शासन से पूर्व का है। इतिहासकारों के मतानुसार, इसका समय ई.स. पूर्व चौथी शताब्दी का है।

सम्राट अशोक को अपने राज्य के प्रशासनिक कार्यों की जानकारियां प्रजा तक पहुंचाना और अपनी विचारधारा को जीवंत रखना था। इसी उद्देश्य से उस समय शिलालेखनविधा का प्रयोग किया जाता था। शिलालेखों को ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर लगाया जाता था, जहां से अधिकतर लोगों की आना-जाना रहता था। इसके पीछे यह आशय भी रहा होगा कि, प्रजा राज्य की संवैधानिक नीति-नियामकता का भली भांति पालन कर सकें। राजा की नीति और भावनाओं को व्यक्त करते, इन शिलालेखों में राजा के श्रेय की महत्ता को भी स्थान मिलता था। इन अभिलेखों की भाषा पहले प्राकृत ही थी, मगर बाद में संस्कृत भाषा का भी उपयोग हुआ।

ब्राह्मी लिपि स्तंभलेख

अशोककालीन शिलालेखों की उपलब्ध संख्या लगभग १४ हैं। इन अभिलेखों का संदेश वर्तमान समय में भी प्रासंगिक जान पडता है। इनमें से कुछ लेखों का अभिगम उल्लेखनीय हैं,

इ.स. पूर्व २५६ वर्ष, अर्थात स्वयं अशोक के शासनकाल के बारहवे वर्ष में लिखित एक लेख गिरनार के शिलालेख पर मिलता है। इसमें माता-पिता की सेवा, मित्र-परिवार, परिचित-अपरिचित व्यक्तियों, अन्य जातियों और ब्राह्मणों आदि की सहायता करने का उल्लेख है। दैनंदिन जीवनचर्या में सादगी और जमाखोरी से बचने जैसे नीति-नियामक सिद्धांतों का उल्लेख है। सामाजिक समरसता, पारिवारिक व्यवस्था, जन-उपकारी भावना और अहिंसा जैसी बातों का भी उल्लेख हुआ है। इतना ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जीवन की श्रेष्ठता को लक्षित विषय भी गिरनार के शिलालेख में उजागर हुए हैं। उदाहरणार्थ- **शील रहित व्यक्ति धर्म का आचरण नहीं कर सकता है।**

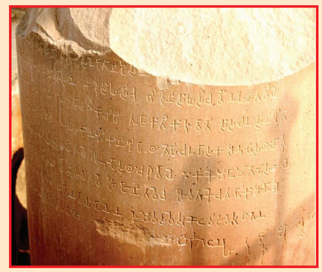

सारनाथ स्तूप

अपने शासनकाल के तेरहवें वर्ष (इ.स पूर्व २५६ वर्ष) में लिखे, छठे शिलालेख में सम्राट अशोक अपने स्वयं के कर्तव्यों की बात करते हुए लिखवाता है कि, **प्रजा के हित की साधना ही मेरा प्रमुख कर्तव्य है। जनहित से श्रेष्ठ कोई कार्य नहीं है।**

इसी शृंखला में लिखे गये सातवें और बारहवें शिलालेख में अपनी धार्मिक उदारता को इन शब्दों में व्यक्त किया है- सभी धार्मिक संप्रदायों के प्रति निष्पक्ष भाव रखना चाहिए, क्योंकि सभी संप्रदायों में कुछ अच्छे गुण होते हैं।

अशोक स्वयं को गुणग्राही बताते हुए शिलालेखों में उल्लेख करवाता है कि, **देवों को प्रिय प्रियदर्शी राजा प्रत्येक संप्रदाय के गृहत्यागी और गृहस्थों का सन्मान करता है। दान आदि विविध प्रकार से उनकी पूजा करता है। प्रत्येक संप्रदाय के श्रेष्ठ विचार वृद्धि पायें इसलिए अपने साथ दूसरों के विचारों का भी सन्मान करना चाहिए। प्रत्येक संप्रदाय के बीच श्रेष्ठ सामंजस्य जरुरी है। देवों को प्रिय राजा अशोक की भावना है कि, प्रत्येक संप्रदाय के विद्वान आगे आकर सबके कल्याण में भागीदार बनें।**

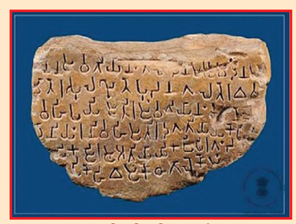

ब्राह्मी लिपि शिलालेख

उपरोक्त लेख शाहबाजगढी (वर्तमान पाकिस्तान स्थित पंजाब प्रांत) में उपलब्ध खरोष्टी लिपि के शिलालेख में मिलता है। काल्सी के ग्यारहवें शिलालेख में दान-धर्म की बात का इस तरह उल्लेख किया है- **धर्म कार्य में दान देना उत्तम कार्य है। धर्म की प्रशंसा जैसी उत्तम अन्य कोई बात नहीं है। धर्म में योगदान करने जैसा अन्य कोई कार्य नहीं है। अपने नोकर-दास की देखभाल करना उत्तम पुरुष का कर्तव्य है। माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, अन्य जाति, ब्राह्मण और श्रमण को दान-सहयोग करना चाहिए। प्राणियों की हत्या नहीं करना, यह उत्तम प्रवृत्ति का विचार है।**

अपने शासनकाल के आठवें वर्ष (इ.स. पूर्व ५६१) के तेरहवें शिलालेख में अशोक अपनी छबि को बढाते हुए लिखवाता है, - **जो भी कोई तुम्हारा खराब करे, उसे देवों को प्रिय प्रियदर्शी राजा अशोक के मत से माफ कर देना चाहिए। इस लोक में विजय द्वारा मिलने वाले संतोष के बजाय, परलोक में मिलने वाला संतोष प्रियदर्शी राजा अशोक को विशेष पसंद है।** यह लेख भी पाकिस्तान स्थित शाहबाजगढी के शिलालेख में मिलता है।

## खरोष्टी लिपि

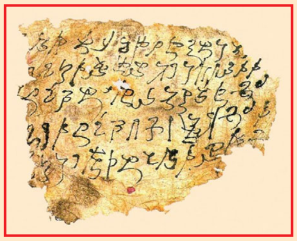

खरोष्टी लिपि ब्राह्मी लिपि की बहन जैसी है। ब्राह्मी लिपि भारत की अन्य लिपियों की तरह बांये से दांयी तरफ लिखी जाती है, मगर खरोष्टी लिपि दाहिने से बांयी तरफ लिखी जाती है। जिस तरह वर्तमान समय में फारसी लिपि लिखी जाती है।

प्राचीन शास्त्रों में ब्राह्मी के बाद **खरोष्टी** दिखाई देती है। चीनी भाषा में इस लिपि के लिए शब्द है,- किआ-बू अथवा किआ-बू-शे-नि, अर्थात् बायें से दायें लिखी जाने वाली लिपि। खरोष्टी का वास्तविक उच्चारण 'ठ' के बजाय 'ट' अधिक प्रामाणिक है, अर्थात **खरोष्टी**। संस्कृत के खरोष्ट शब्द से **खरोष्टी** के उद्भव का भी तर्क है। दूसरा तर्क यह भी माना जाता है कि, यह लिपि एक राजा के नाम से प्रसिद्ध हुई है। मथुरा के खनन से प्राप्त सिक्कों पर खरोष्ट राजा का नाम है। संभवतः इस कारण भी इस लिपि कों यह नाम मिला होगा। कुछ विद्वान इस लिपि को **'खरोष्टी'** कहते है तो कुछ **'खरोष्ट्री'** भी कहते हैं। तर्क यह भी है कि, इस लिपि के अक्षरों की बनावट गधे के जबडों जैसी है, इसलिए खरोष्ट्री उच्चारण है।

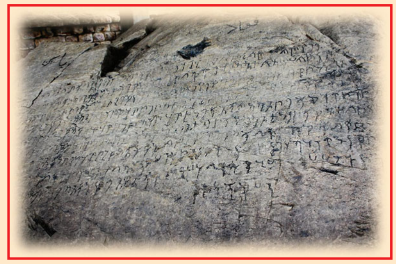

खरोष्टी शिलालेख शाहबाजगढी (पाकिस्तान)

खरोष्टी भी ब्राह्मी की तरह प्राचीन लिपि है। इसका प्रचलन उत्तर-पश्चिम अर्थात् वर्तमान भारत के वायव्य प्रांत (वर्तमान सिंध, गंधार, पेशावर, रावलपिंडी, ईरान, ईराक आदि) में रहा है। अफगानिस्तान, हिन्दुकुश, गंधार से लगाकर हमारे देश के जम्मू-काश्मीर, हिमालय और हरियाणा के कुछ हिस्सों में इसका प्रभाव देखा गया है। इ.स. पूर्व तीसरी और चौथी शताब्दी तक खरोष्टी लिपि का रोजमर्रा के व्यवहार में काफी प्रचलन था। यह काल आज से २३०० से २६०० वर्ष तक आंका गया है।

पहली से लगाकर पांचवीं शताब्दी तक बंग प्रदेश (वर्तमान में बांगलादेश) में भी यह पूर्वी खरोष्टी के नाम से प्रचलित थी। पूर्वी-खरोष्टी की विशेषता यह है कि, इसमें ब्राह्मी और खरोष्टी दोनों के मिश्रित अक्षर होते थे। यह विमिश्रित लिपि **ललितविस्तर नामक बौद्धशास्त्र** में खरोष्टी-ब्राह्मी कहलायी। व्यवसाय के खातिर यह थायलंड तक भी पहुंच गई थी।

इस तरह ब्राह्मी और खरोष्टी जैसी प्राचीन भारतीय लिपियों के इतिहास के अध्ययन के लिए हमारे पास अब मात्र कुछ शिलालेख ही बचे हैं। जिस तरह भाषाओं का विकास पतन होता रहा है उसी तरह इन दोनों प्राचीन लिपियों के साथ बहुत सारे प्रश्न और उत्तर अनछूए रह गये हैं।

# पूज्य मुनिराज श्री संयमरतिविजयजी महाराज : सद्गति संप्राप्ति

वि.सं. २०३२ में माह सुद १० के दिन जन्मे परमार गोत्रीय **श्री साकरचंदजी धुडाजी ओसवाल** का राजस्थान में रामसीन के समीप पूनक गांव में जन्म हुआ था। यहीं १५ वर्ष की उम्र में **पू.उपा.श्री केवलविजयजी म.सा.** के चातुर्मास में विशेषधर्म का बोध प्राप्त किया। कुछ ही वर्षों में पूना में आकर बस गये। यहां **प.पू.पं. श्री चरणविजयजी म.** के पास पंच प्रतिक्रमण का अभ्यास किया। पौषध आदि व्रतों में महारत हांसिल की। वि.सं.२०३२ में अपने जन्म दिन पर गृहमंदिर में **श्री मुनिसुव्रत स्वामी** भगवान विराजित कर, परमात्मा से निकटता बढाई।

एक बार किसी काम से अंकलेश्वर जाना पडा, वहां पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा के व्याख्यान सुनकर उनके जीवन में बडा परिवर्तन आया और चारित्र का मनोरथ जाग उठा। मगर लग्नबंधन में बंध चुके साकरचंदजी की द्विधा ने उन्हें साधुजीवन तक पहुंचने से रोके रखा। बीमार पत्नी के जीवित रहने तक उनकी आजीवन सेवा की। फिर भी उस गृहस्थ जीवन में भी वे उच्चकक्षा के आराधक बने रहे। प्रतिदिन नित-नये मंदिर मे भक्तिपूर्वक पूजा करने का उनका क्रम जारी था। पौषध और तप की शृंखलाओं से अपना धर्म पराक्रम वृद्धिंगत करने लगे। जीवन में ९ वर्षीतप, वर्धमानतप की ३१ ओली, नवपद की ७० ओली, चार मासी तप, दो बार सिद्धि तप, चत्तारिअट्ठदसदोय तप, महावीर स्वामी के २२९ छठ और चोविहार छठ सहित ३ बार सातयात्रा जैसे अन्य भी अगणित तप की आराधना की। भारत के लगभग समस्त तीर्थ की यात्राएं की। पूरे वर्ष में लगभग ५ महिने पौषध जैसी संयमलक्षी जीवन के साथ उनके मन में साधु जीवन की आस रहती थी।

वि.सं.२०६४ में पूना में श्रावस्ती संघ के चातुर्मास दरम्यान उन्हें प.पू. साध्वीजी श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म. के द्वारा संयम अंगीकार करने की प्रेरणा की। वि.सं.२०६५ के वैशाख सुद ६ के दिन पूना के गोलीवाला भवन श्रावस्ती संघ में ८२ साल की उम्र में दीक्षा ग्रहण की। मुनिराज श्री **संयमरतिविजयजी** नाम से, मुनिराज श्री **वैराग्यरतिविजयजी** के (हाल गणिवर्य) शिष्य घोषित हुए। वि.सं.२०६६ माह सुद १४ शुक्रवार के दिन उनकी बडी दिक्षा पू. आचार्य **पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी** म. के वरदहस्तों से हुई।

दीक्षा के पश्चात् उनकी आराधना और अभ्यास बढने लगा। प्रतिदिन ५-६ घंटे वाचन करते थे। प्रतिदिन १०८ लोगस्स का काउसग्ग दो तीन बार करते थे। उवसग्गहरं की ५-६ माला, १५ बांधी नवकार वाली, ७ वर्ष तक नियमित एकासना, १४-१५ एवं १४-अमावस के छठ, आदि उनकी तप-त्याग-तितिक्षा अनुमोदनीय है।

दीर्घ वृद्धावस्था में अल्सर, हार्निया, कमर में फ्रेक्चर और शरीर में सोडियम की कमी रहने के कारण बीमार रहने लगे, इसके बावजूद प्रत्येक क्रिया में उनकी उपयोग-सतर्कता रहती थी।

अंतिम ६ महिने में उन्होंने परभव की तैयारी प्रारंभ कर दी थी। प्रत्येक व्यक्ति से क्षमापना और अपने दोषों को याद कर उसकी आलोचना की। प्रतिदिन दो बार समाधि पाठ का वाचन करते थे। कारतक वद १०+११ की शाम उन्हे खून की उल्टियां हुई। इस बैचेनी में भी श्री नमस्कार मंत्र, चार शरण स्वीकर करते समय पूज्य गुरु गणिवर्य श्री **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा. की समीपता उन्हें

प्राप्त हुई। श्री **शंखेश्वर पार्श्वनाथ** भगवान, श्री **जीरावला पार्श्वनाथ** भगवान, श्री **सिद्धगिरि महातीर्थ**, परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् **विजयप्रेमसूरीश्वरजी** महाराजा, परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् **विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजा की छबियों का ध्यानपूर्वक दर्शन किया। परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् **नयवर्धनसूरीश्वरजी** महाराज रचित समाधि स्तोत्र सुनने की इच्छा व्यक्त की। ऐसी अनुपम चेतना के साथ परम समाधिभाव का अनुभव करते हुए, रात्रि १२.०५ बजे, बिना किसी प्रकार की पीडा का अनुभव किये, स्वस्थतापूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए।

कार्तिक कृष्ण द्वादशी शनिवार दि. २३-११-२०१९ के दिन सुबह ११ बजे श्रुतभवन से उनकी अंतिमयात्रा निकली। अंतिमयात्रा में **श्री टिंबर मार्केट जैन टेंपल ट्रस्ट, आगम मंदिर (कात्रज) टेंपल ट्रस्ट, फातिमानगर जैन संघ, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ टेंपल ट्रस्ट- मानाजी कसनाजी धडा, श्री श्रावस्ती जैन संघ, गुलटेकडी, हाईड पार्क परिवार, वर्धमानपुरा जैन संघ** आदि पूना शहर के विविध संघ के ट्रस्टी एवं अग्रणी उपस्थित थे।

पूना हॉस्पिटल के व्यवस्थापक **सु. देवीचंदजी केसरीमलजी जैन, सु. डाह्याभाई शाह, सु. भबुतमल जैन** तथा **डॉ. अजित तांबोळकर, रेखा धनवाणी, डॉ. संदीप शाह, कात्रज, डॉ. नवनाथ शिंदे** आदि ने बहुत सुंदर सहकार्य किया। उनके ईलाज का लाभ **श्रमण आरोग्यम् जितो** ने लिया था। **श्रुतभवन के ट्रस्टी सु. भरतभाई, सु. सचिनभाई, सु.मनोजभाई, सु. आशुतोषभाई, सु. राजेंद्रभाई, सु. ललितभाई, सु. ओमजी ओसवाल, कुमारपालभाई शाह, फातिमानगर** तथा अनुरागी भक्तजनों ने उनकी बहुत सुंदर सेवा की। उनके संसारी सुपुत्र **सु. कनैयालाल** एवं पुत्रवधु **श्रीमती पुष्पाबेन** ने भी उनकी बहुत अच्छी सेवा की। सा. **श्री जिनरत्नाश्रीजी** म. सा. ने भी उनको उत्तम समाधि दी थी। सरलता, समर्पण और सहनशीलता का आदर्श देकर जानेवाले मुनिवर की आत्मा परमपद को शीघ्र प्राप्त करे यही मनोकामना।

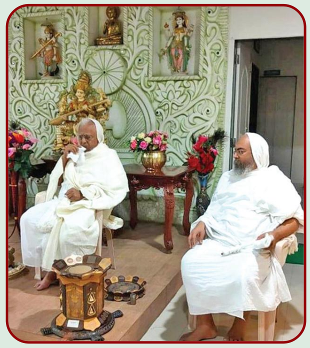

दि. ०२-०२-२०२० के दिन पूज्यपाद **गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजयपुण्यपालसूरीश्वरजी म.सा.** श्रुतभवन में पधारे, श्रुतभवन के प्रकल्पों की बारकाई से जानकारी ली और एक रात्रि स्थिरता भी की।

## समाचार

- दि. १२-१०-२०१९ शनिवार के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में श्रुतभवन में विभिन्न विषयों पर संस्कृत भाषा में **वाक्यार्थ सभा** का आयोजन किया गया। **इस सभा में ६ पंडितों ने वाक्यार्थ किया।** डेक्कन कॉलेज के प्रभारी कुलगुरु **प्रा. प्रसाद जोशी** सभा के अध्यक्ष थे।
- दि. १-११-२०१९ शुक्रवार के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में श्रुतभवन में **ब्राह्मी लिपि पूजन** तथा **ज्ञानपंचमी** देववंदन और दि. ८-१२-२०१९ रविवार के दिन **मौन एकादशी पर्व आराधना** का कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।
- दि. १६-११-२०१९, ३०-११-२०१९, १४-१२-२०१९ और २८-१२-२०१९ शनिवार के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में श्रुतभवन में **तत्त्वार्थाधिगमसूत्र** (अध्याय-१,२) विषय पर संस्कृत भाषा में **स्वाध्याय सभा** का आयोजन किया गया। इस सभा में श्रुतभवन के ६ पंडितों ने वाक्यार्थ किया।
- दि. २०-२१-२२/ १२/२०१९ इन दिनों में पूज्य गुरुदेव **श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, भवानी पेठ** में पौष दशमी कार्यक्रम हेतु पधारे। हर रोज सुबह पूज्य गुरुदेव का व्याख्यान हुआ।
- दि. २२-१२-२०१९ के दिन पूज्य गुरुदेव पूज्य पंन्यास श्री **विरागसागरजी** म. सा. से नाकोडा मंदिर में मिलना हुआ। पूज्य पंन्यासजी म.सा. से **श्रुतसंरक्षण** के बारे में वार्तालाप हुआ।
- दि. २२-१२-२०१९ के दिन पूज्य गुरुदेव परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय **धर्मधुरंधरसूरीश्वरजी** म.सा. और पूज्य उपाध्याय श्री **योगेंद्रविजयजी** म.सा. के दर्शनार्थ पधारे। पूज्य गच्छाधिपति म.सा. से विशेष वार्तालाप हुआ। वहां विचार संगोष्ठी प्रश्न मंच का आयोजन किया था।
- दि. ११-०१-२०२० शनिवार के दिन, पुणे स्थित **श्री वर्धमान स्वामी जैन चॅरिटेबल ट्रस्ट, सदाशिव पेठ** श्रीसंघ में परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् **विजयपुण्यपालसूरीश्वरजी** महाराजा की पावन निश्रा एवं विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद की पावन उपस्थिति में **अक्षरश्रुतम्** प्रकल्प के अंतर्गत संपादित एवं ताडपत्र पर शास्त्रांकित **भवभावना, बुद्धिसागर** एवं **स्तोत्रसंग्रह** ग्रंथों का संघार्पण संपन्न हुआ।
- दि. १२-०१-२०२० के दिन सुबह पुणे स्थित **वर्धमानपुरा संस्कार वाटिका** के ५० विद्यार्थी एवं विद्यार्थिनी उनके ९ शिक्षिकाओं के साथ श्रुतभवन में पधारे। उन्हें पूज्य गुरूदेव ने **ब्राह्मी लिपि उद्गम** विषय पर जानकारी दी।
- दि. १८-१-२०२० के दिन श्री **महावीर डिलाईट जैन संघ** के अंजनशलाका प्रतिष्ठा निमित्त मीरा-आनंद जैन संघ में पू. आ. श्री **विश्वकल्याणसूरिजी** म.सा. की निश्रा में उछामणी कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव पधारे थे।
- दि. १८/१९-०१-२०२० के दिन अहमदाबाद में प्रथम आंतरराष्ट्रीय जैन कॉन्फरन्स का आयोजन किया था। उसमें पूज्य गुरुदेव का **'चिरंजीव विचार'** यह लेख पढा गया। श्रुतभवन की प्रस्तुति भी हुई।

## कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **लोकप्रकाश, ऋतुसंहार टीका, तर्कभाषाचन्द्रिका, वनस्पतिसप्ततिका, उपदेशशत सह टीका, अमरकोश सह टीका, पृथ्वीचंद्रचरित्र, अरिष्टनेमिजिनचरित्र, अनेकार्थनाममाला सह टीका** का संपादन कार्य प्रवर्तमान है। पू. आ. **श्री जगच्चंद्रसू.** म.सा. (डहेलावाला) के शिष्य मु. श्री. **नयज्ञविजयजी** म.सा. पू.पं. श्री **कनककुशलगणिजी** की कृतियों के उपर कार्य कर रहे हैं।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म.सा., पू. आ. श्री **योगतिलकसू.** म.सा., पू. आ. श्री **रश्मिरत्नसू.** म.सा., पू. आ. श्री **उदयरत्नसू.** म.सा., पू. मु. श्री **शीलचंद्रवि.**म.सा., पू. मु. श्री **देवर्धिवल्लभवि.** म.सा.(तपोवन), पू. मु. श्री **कीर्तींद्रवि.**म.सा., पू. मु. श्री **तीर्थयशवि.** म.सा., पू.मु.श्री **मंगलयशवि.** म.सा., पू.मु.श्री **श्रुतसुंदरवि.**म.सा., पू. **निरजमुनिजी** म.सा.(साधुमार्गी संप्रदाय) तथा **डॉ.शीतल शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

## प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट, भवानी पेठ, पुणे
- श्री कांतीलालजी फत्तेचंदजी छाजेड परिवार, पुणे
- श्री वासुपूज्य स्वामी मीरा-आनंद जैन संघ, शंकरशेठ रोड. पुणे
- श्री जुहू स्कीम जैन संघ, वीलेपार्ले, मुंबई
- फाल्गुनी धरम छेडा
- श्री सिद्धार्थ शाह
- श्री वर्धमान स्वामी जैन चॅरिटेबल ट्रस्ट, सदाशिव पेठ, पुणे
- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, सायन, मुंबई
- श्री गोवालिया टैंक जैन संघ, मुंबई
- श्री सुपार्श्वनाथ जैन संघ, मार्केट यार्ड, पुणे
- स्व. हंसाबेन विनुभाई पोपटलाल शाह, अहमदाबाद
- आरटेक्स ऍपरेल्स परिवार, अहमदाबाद
- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, गुलटेकडी, पुणे (श्राविका)
- श्री मुनिसुपार्श्वशांति जैन संघ, ईशा पॅलेस, पुणे (श्राविका)
- सौ. सोनालीबेन भूपेंद्रकुमार भिकमचंदजी खिंवसरा, दापोली
- डॉ. ज्योतिबेन नीतिनभाई महेता, मोरबी-पुणे
- प्रेमीलाबेन बुधालाल शाह की पुत्रवधू सरयूबेन के आत्मश्रेयार्थ

## प्रतिभाव

आपके द्वारा प्रवर्तमान श्रुतसेवा का यह महान कार्य देखकर बहुत खुशी हुई। सम्यक् श्रुतसेवा का यह कार्य सभी के लिए अनुमोदनीय है। आपके प्रयासों से जिनशासन की प्रच्छन्न श्रुत की विरासत अधिकाधिक दीप्तिमंत और कीर्तिमंत बने।

परोपकारी पूज्यपादश्रीजी के आदर्शों को ध्यान में रखते हुए, आप श्रुतसेवा के इस कार्य में एक लंबा रास्ता तय करें और परमपद को पानेवाले बने यही अंतःकरण से शुभकामना और आशीर्वाद।

– विजय पुण्यपालसूरि

## पदार्पण

**श्रुतभवन** में पू. आ. श्री **दिव्यकीर्तिसू.** म.सा., पू. आ. श्री **हेमेंद्रसू.** म.सा., पू. मु. श्री **आगमभूषणवि.** म.सा., पू. सा. श्री **निर्मलदर्शनाश्रीजी** म.सा., सा. श्री **नमिवर्षाश्रीजी** म.सा., **शैला नीरद दलाल** (अहमदाबाद), श्री **ऋषभचंद्र जैन** (निर्देशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान), **मंजुलताजी मंगलप्रभातजी लोढा** (संस्थापक अध्यक्षा, जैनतीर्थ श्री लोढाधाम, मुंबई), **रणजीतजी जैन** (संचालक, जितो ऍपेक्स), **रमेशजी जैन** (श्रमण आरोग्यम्), **कांतिलालजी कांकरिया, धीरेंद्रजी कुमार** का पदार्पण हुआ।

## सुवाक्य

**अण्णाणं परमं दुक्खं, अण्णाणा जायते भयं।**
**अण्णाणमूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिणं।।**

**–इसिभासियाइं २१।१**

**अज्ञान सबसे बडा दुःख है।**
**अज्ञान से भय उत्पन्न होता है, सभी प्राणियों के संसारभ्रमण का मूल कारण अज्ञान ही है।**

**Printed Matter**

**Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide**

**To,**

**From : Shrutbhavan Research Centre**
**(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)**
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel